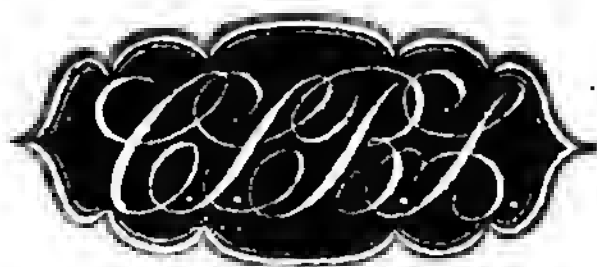


पादरी आदम साहिब कर्के
रचित
बालकोंके शिक्षानेके लिये
प्रश्नोत्तरकी रीतिसे स्पष्ट हिन्दी भाषाका
व्याकरण ।

A
HINDEE GRAMMAR.
FOR
THE INSTRUCTION OF THE YOUNG,
IN THE
Form of easy Questions and Answers,



BY
THE REV. M. T. ADAM.



Calcutta:

PRINTED AT THE PRESS OF BRAJAMOHUN CHUCKERBUTTEE, FOR THE
CALCUTTA SCHOOL BOOK SOCIETY, AND SOLD AT THE DEPOSITORY,
LOWER CIRCULAR ROAD,

1837.

1st. Ed. **1827. 1000 Copies.**
2nd. Ed., **1837, 1000 ditto.**

सूची पच ।

वर्णकेविषयमें	१
संज्ञा	२
चिह्न	७
कारक	८
गुणवाचक	१३
सर्वनाम	१५
क्रिया	२५
अकर्मकक्रिया होना और जाना	२६
कर्तृवाच्यक्रिया	३५
भेदार्थक्रिया	३८
कर्मणिवाच्यक्रिया	४२
नकारसहितक्रिया	४६
निश्चयबोधकसही	४६
संयुक्तक्रिया	४६
क्रियाविशेषण	४८
उपसर्ग	४८
परवर्त्ती	४८
यौगिकशब्द	४८
आक्षेपोक्ति	५०
रचनाकीरीति	५१
मिथानेके विषयमें	५२

सूची पञ्च ।

वातका अधिकार ..	५७
—संज्ञा ..	५७
—क्रिया ..	५७
—असमाधिका क्रिया ..	५८
—सांज्ञिक क्रिया ..	५७
—परवर्ती ..	५८
समास ..	६०
सन्धिवर्णन ..	६१
सुरसन्धि ..	६१
द्वयसन्धि ..	६२
विसर्गसन्धि ..	६३
कोष ..	६५

व्याकरण ।

प्रथम खंड । वर्णके विषयमें ।

१ पाठ ।

१ प्रश्न । हिन्दी भाषाकी वर्णमाळा कै प्रकारसे विभाग किई गई है ?

उत्तर । हिन्दी वर्णमाळामें दो भाग हैं, अ आदि जो : विसर्गान्त अक्षर व खर कहै जाते हैं, यह एक भाग ; और क आदि अ पर्यन्त जो अक्षर वे व्यञ्जन कहै जाते हैं, यह दूसरा भाग है।

२ प्र । कौनसे अक्षरोंको खर कहते हैं ?

उ । अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ऎ ऐ
ऒ ओ ए ऐ ओ औ ऒ ऑ,

इन सोखह अक्षरोंको खर कहते हैं।

३ प्र । व्यञ्जन अक्षर किन्को कहते हैं ?

उ । क ख ग घ ङ ।
च छ ज झ ञ ।
ट ठ ड ढ ण ।
त थ द ध न ।
प फ ब भ म ।
य र ल व — ।
श ष स ह ण,

इन चौतीस अक्षरोंको व्यञ्जन कहते हैं।

४ प्र। खरोंके मध्यमें कौनसे वर्ण फल कहे जाते हैं?

उ। क ख उ ञ ङ, खरोंके मध्यमें येही पांच वर्ण फल कहे जाते हैं।

५ प्र। खरोंके मध्यमें दीर्घ वर्ण किन्को कहते हैं?

उ। आ ई ऊ ऋ ॠ ए ऐ ओ औ, खरोंके मध्यमें दीर्घ वर्ण इनको कहते हैं।

॥॥॥॥॥॥

२ पाठ ।

१ प्र। खर वर्णोंका कोई औरभी आकार है?

उ। हाँ, व्यञ्जनोंके साथ मिलनेको औरभी आकार है; जैसा,

। ि ि ७ ९ ८ ६ ख ख ७ ८ ६ ि ि :

२ प्र। खरोंमें व्यञ्जनका मेल होनेसे कैसा स्वरूप होता है?

उ। व्यञ्जन और स्वर इन दोनोंके मिलनेसे ऐसा स्वरूप होता है; जैसा कि,

क का कि की कु कू ख खु
खू खा के कै को कौ कं कः ।

सब व्यञ्जनोंका खरोंके साथ इसी प्रकारसे संयोग होता है, और इसीको वर्तनी वा वनानभी कहते हैं।

३ प्र। व्यञ्जनोंके मध्यमें वर्ण कितने हैं?

उ। व्यञ्जनोंमें क वर्णोंसे य वर्णसुग पांच वर्ण हैं; जैसा,

क ख ग घ ङ। ये पांच क वर्ण।

च छ ज झ ञ। ये पांच च वर्ण।

ट ठ ड ढ ण। ये पांच ट वर्ण।

क घ ङ न । ये पांच ल वर्ग ।

प फ ब भ म । ये पांच प वर्ग ।

३ प्र । अल्पप्राय किन् वर्गोंको कहते हैं ?

उ । एक एक वर्गके पहिले और तीसरे वर्गको अल्पप्राय कहते हैं ; जैसा, क, ख, च, ज, इत्यादि ।

५ प्र । महाप्राय किन् वर्गोंको कहते हैं ?

उ । प्रत्येक वर्गके दूसरे और चौथे वर्गको महाप्राय कहते हैं ; जैसा, ग, घ, ङ, म, इत्यादि ।

२ पाठ ।

१ प्र । अनुनासिक अक्षर कितने हैं ?

उ । ङ न य म म,

ये पांच अक्षर अनुनासिक हैं ।

२ प्र । सानुनासिक किस्को कहते हैं ?

उ । चन्द्रविन्दु और अनुसार ये दोनोंको सानुनासिक कहते हैं ; जैसा, हाँजी, हंस ।

३ प्र । वर्णमालाके अक्षरोंका उच्चारण किन् स्थानोंसे होता है ?

उ । कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त, ओष्ठ, इन् पांच स्थानोंसे सब अक्षरोंका उच्चारण होता है ।

४ प्र । कण्ठमें किन् अक्षरोंका उच्चारण होता है ?

उ । अ, आ, ए, ओ, ऐ, औ, इ, क, ख, ग, घ, ङ, इन् सब अक्षरोंका उच्चारण कण्ठमें होता है, इसीलिये इन्को कण्ठ्य कहते हैं ।

५ प्र । तालुमें किन् अक्षरोंका उच्चारण होता है ?

उ । इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ, य, रा, ए, ऐ, इन् सब अक्षरोंका उच्चारण तालुमें होता है, इसीलिये इन्को तालुय कहते हैं ।

६ प्र। मूर्जामें किन् र अक्षरोंका उच्चारण होता है?

उ। ऋ ऋ ट ठ ड ढ ण र व, इन् सब अक्षरोंका उच्चारण मूर्जामें होता है, इसीलिये इन्को मूर्जन्य कहते हैं।

७ प्र। दांतमें किन् र अक्षरोंका उच्चारण होता है?

उ। कृ लृ त थ द ध न ञ स व, इन् सब अक्षरोंका उच्चारण दांतमें होता है, इसलिये इन्को दन्त्य कहते हैं।

८ प्र। ओष्ठमें किन् र अक्षरोंका उच्चारण होता है?

उ। उ ऊ ण फ ब भ म व ओ औ, इन् सब अक्षरोंका उच्चारण ओष्ठमें होता है, इसलिये इन्को ओष्ठ्य कहते हैं।



४ पाठ ।

१ प्र। व्यञ्जन अक्षरोंमें अन्तस्थ वर्ण किन्को कहते हैं ?

उ। य र ल व, इन् चार व्यञ्जनोंको अन्तस्थ कहते हैं।

२ प्र। व्यञ्जनोंके मध्यमें उभयार्ध वर्ण किन्को कहते हैं ?

उ। श ष स ह, इन् चार व्यञ्जनोंको उभयार्ध वर्ण कहते हैं।

३ प्र। वर्णमात्राके मध्यमें किन् र अक्षरोंको फल्ला कहते हैं ?

उ। य र ल व न म ऋ लृ र, इन्का दूसरा स्वरूप ऐसा य ऋ लृ ऋ ऋ ऋ ऋ ऋ ऋ, इन् सब अक्षरोंको फल्ला कहते हैं।

४ प्र। फल्लाका औरर अक्षरोंको साथ मेल होनेसे, कैसा आकार होता है ?

उ। क्वारी, ग्रहण, क्षीव, ध्वजा, क्षान, क्खन, वृष्टि, कृ, कर्म, इस प्रकारसे अनेकान् शब्दोंमें ऐसा संयोग होता है।

५ पाठ ।

१ प्र। किन् अक्षरोंमें अनुनासिक कर्माका मिश्रण होनेसे, सानुनासिक उच्चारण होता है?

उ। एकर अनुनासिक अक्षर केवल अपने वर्गके एकर अक्षरमें मिश्रकर सानुनासिक उच्चारण होता है; जैसा कि,

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म

अधिक तो, क, र, कुड़ायकर अन्तस्थ वर्ण और उभय वर्ण और छ, इन सबमें मिश्रके सानुनासिक होते हैं; जैसा,

क	—	क	क	—
ख	ख	ख	ख	ख

२ प्र। व्यंजनोंमें संयुक्त अक्षर सब सुझाँ और कितने हैं?

उ।	क	ख	ग	घ	ङ
	च	छ	ज	झ	ञ
	ट	ठ	ड	ढ	ण
	त	थ	द	ध	न
	प	फ	ब	भ	म
	य	र	ल	व	श
	स	ह	ळ	ळ	—
	व	व	व	व	व

ये चौतीस अक्षर संयुक्त हैं।

दूसरा खण्ड ।

संज्ञाके विषयमें ।

१ पाठ ।

१ प्र । संज्ञा किसको कहते हैं ?

उ । वस्तुके नाममात्रको संज्ञा कहते हैं; जैसा, मनुष्य, वृक्ष, जल, धन, पर्वत, पुस्तक, काशी, कलम, इत्यादि ।

२ प्र । संज्ञा कितने प्रकारोंसे भेद किई जाती है ?

उ । प्रकृत नामवाचक, जातिवाचक, भाववाचक, और क्रियावाचक; इन चार प्रकारोंसे संज्ञा भेद किई जाती है ।

३ प्र । प्रकृत नामवाचक किसको कहते हैं ?

उ । प्रत्येक मनुष्यके नाम, वह नगर वा देश नदी वा पर्वत-इत्यादिके नामको प्रकृत नामवाचक कहते हैं; जैसा, राममोहन, पटना, कुरुक्षेत्र, गङ्गा, विन्ध्य ।

४ प्र । जातिवाचक किसको कहते हैं ?

उ । मनुष्य, पशु, पक्षी, इत्यादि सब शब्दोंको जातिवाचक कहते हैं, अर्थात् मनुष्य शब्दसे सब मनुष्य समझे जाते हैं, पशु शब्दसे सब पशु, और पक्षी शब्दसे सब पक्षी समझे जाते हैं ।

५ प्र । भाववाचक किसको कहते हैं ?

उ । गुणवाचक शब्दके परेत्वं, और ता, ये दो प्रत्यय होनेसे वस्तुको भाववाचक कहते हैं; जैसा गुणवाचक उत्तम शब्दके परेत्वं और ता ये प्रत्यय होनेसे उत्तमत्व वा उत्तमता ।

६ प्र । परन्तु जातिवाचक शब्दसेभी कभी२ भाव वाचककी रचना होती है क्या नहीं ?

उ। हाँ, जातिवाचक शब्दसे परे केवल त्व प्रत्यय करनेसे, भाव-वाचककी रचना होती है; जैसा, जातिवाचक मनुष्य शब्दसे परे त्व प्रत्यय करनेसे मनुष्यत्व और ईश्वरत्व।

७ प्र। क्रियावाचक किस्को कहते हैं?

उ। धातुवर्ध मात्रको क्रियावाचक कहते हैं; जैसा. कना, सेना, जाना, खाना, आना, रखना, सुनना, सूँघना, देखना, बोलना, इत्यादि।

८ प्र। और किसी प्रकारसेभी संज्ञा अलग किई गई है, क्या नहीं?

उ। हाँ, प्राणिवाचक और अप्राणिवाचक, इन् दो भागोंसे अलग किई गई है।

९ प्र। प्राणिवाचक किन्को कहते हैं?

उ। जीवधारी सभी प्राणिवाचक कहावते हैं; जैसा, जीव, जन्तु, कीट, पतङ्ग, आदि।

१० प्र। अप्राणिवाचक किन्को कहते हैं?

उ। जीव बिना सभी अप्राणिवाचक कहावते हैं; जैसा मट्टी, पाषाण, पर्वत, आदि।

२ पाठ।

लिङ्गके विषयमें।

१ प्र। संज्ञाका विभाग कितने लिङ्गोंमें किया गया है?

उ। पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग, इन् तीन लिङ्गोंमें किया गया है; जैसा, मर, नारी, ज्ञान।

२ प्र। पुल्लिङ्गके बोधक शब्द कौनसे हैं?

उ। पुरुषबोधक व्यञ्जनान्त वा स्वरान्त सभी शब्द पुल्लिङ्गके बोधक हैं; जैसा मनुष्य, हाथी, घोड़ा, बैल।

३ प्र। स्त्रीलिङ्गके बोधक शब्द कौनसे हैं?

उ। स्त्रीके बोधक सभी शब्द स्त्रीलिङ्गके बोधक हैं; जैसा नारी, हथिनी, घोड़ी, गाय।

४ प्र। आ ई नो ति, वे प्रत्यय जिन् शब्दोंके अन्तमें होय वे स्त्रीलिङ्ग हैं क्या नहीं?

उ। हाँ हैं, जैसा, माता, चातुरी, सुजनी, सम्मति।

५ प्र। कोई अकारान्त वा हलन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द है क्या नहीं?

उ। हाँ है; जैसा, बात, घास, धाम, जुगत्, सम्पत्, विपत्, कचियाहट्, इत्यादि।

६ प्र। अकारान्त वा हलन्त जो शब्द उससे परे आ और ई प्रत्यय होनेसे स्त्रीलिङ्ग बच् होय क्या नहीं?

उ। हाँ होय; जैसा, भ्रष्ट भ्रष्टा, चक्षु चक्षुषा, वा गरम् गरमी, गरम् गरमी, इत्यादि।

७ प्र। सब दीर्घ अकारान्त पशु पक्षी वाचक शब्दसे दीर्घ ई प्रत्यय होनेसे स्त्रीलिङ्ग होय क्या नहीं?

उ। हाँ; जैसा, घोड़ा, घोड़ी, गधा गधी, बिछा बिछी, मुरगा मुरगी। *

८ प्र। दीर्घ ई कारान्त शब्दसे नी प्रत्यय होनेसे, पूर्वको ऋ ख कर्के स्त्रीलिङ्ग होय क्या नहीं?

उ। हाँ होय; जैसा, हाथी हथिनी, हसी हस्थिनी, जानी जानिनी, मानी मानिनी।

९ प्र। मपुंसक लिङ्ग किसको कहते हैं?

उ। संस्कृतकी रीतिसे स्त्रीलिङ्ग पुलिङ्ग भिन्न जो शब्द उसको

* हरिह हरिही, नन ननी, भेडा भेडी, बकरा बकरी, काका ककी, मामा मानी।

नपुंसकलिङ्ग कहते हैं; जैसा, जल, फल, धन, वन, इत्यादि।
परन्तु हिन्दी भाषामें नपुंसकलिङ्गका बोधक कोई प्रत्यय नहीं है।

३ पाठ ।

कारकके विषयमें।

१ प्र। कितने कारकोंमें संज्ञाकी घटना होती है ?

उ। कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण और सम्बोधन*, इन आठ कारकोंमें संज्ञाकी घटना होती है।

२ प्र। व्यञ्जनान्त पुलिङ्ग संज्ञाका कारक कैसा है ?

उ। वह इस प्रकारका है।

एक वचन ।	बहु वचन ।
कर्त्ता, वासक	कर्त्ता, वासके
कर्म, वासकको	कर्म, { वासकन् वा -कों, -को
करण, वासककर्त्ते	करण, { वासकन् वा -कों, -कर्त्ते
सम्प्रदान, { वासकके लिये वा वासकको	दसम्प्रदान, { वासकन्, वा -कों के लिये, वा वा- सकन् वा -कों, -को
अपादान, वासकसे	अपादान, वासकन् वा -कोंसे
सम्बन्ध, { वासकका -के, -की	सम्बन्ध, { वासकन् वा -कोंका, -के-की
अधिकरण, { वासकमें वा वासकके विषय	अधिकरण, { वासकन् वा कोंमें, वासकन् वा -कोंके विषय
सम्बोधन, हे वासक	सम्बोधन, हे वासको †

* सम्बोधन पदको कारक नहीं कहते हैं, क्योंकि भाषामें सम्बोधनको कारकत्व नहीं पाया जाता, परन्तु संस्कृतके अनुसारसे कोईर मानते हैं सही; इसलिये हम उसको इहाँ भी लिखेंगे।

† कुकर, मोर, भूत, पिशाच, जकन, पाप, इत्यादि सब शब्दोंके कारक वासकके कारकोंकी न्याय अभ्यास करना।

१ प्र। खरान्त पुलिङ्ग संज्ञाका कारक कैसे होता है ?

उ। वह इस प्रकारसे होता है।

एक वचन ।

बहु वचन ।

कर्त्ता,	खडका	कर्त्ता,	खडके
कर्म,	खडकेको	कर्म,	खडकन् वा-को-को
करण,	खडके कर्के	करण,	खडकन् वा-को कर्के
सम्प्रदान,	{ खडकेके विधे वा खडके को	सम्प्रदान,	{ खडकन् वा-कोके विधे वा खडकन् वा-कोको
अपादान,	खडकेसे	अपादान,	खडकन् वा-कोसे
सम्बन्ध,	खडकेका,-के-की	सम्बन्ध,	{ खडकन् वा-को का,-के,-की
अधिकरण,	{ खडकेमें वा खडकेके विषय	अधिकरण,	{ खडकन् वा-कोमें वा खडकन् वा-को के विषय
सम्बोधन,	हे खडके	सम्बोधन,	हे खडको *

४ पाठ ।

१ प्र। खरान्त स्त्रीलिङ्ग संज्ञामें किस प्रकारसे कारकोकी घटना होती है ?

उ। उसमें इस प्रकारसे घटना होती है।

* बेटा, बौटा, लोटा, सोता, चिवांता, मेडा, इत्यादि सब शब्दोंके कारक खडकेके कारकोकी न्याय अभ्यास कर्ता ।

एक वचन ।

कर्त्ता,	खड़की
कर्म,	खड़कीको
करण,	खड़कीकरके
सम्प्रदान,	{ खड़कीके लिये वा खड़कीको
अपादान,	खड़कीसे
सम्बन्ध,	{ खड़की का के, की
अधिकरण,	{ खड़कीमें वा खड़कीके विषय
सम्बोधन,	हे खड़की

बहु वचन ।

कर्त्ता,	खड़कियाँ
कर्म,	{ खड़कियों वा -कीन् को
करण,	{ खड़कियों वा -कीन् करके
सम्प्रदान,	{ खड़कियोंके वा -कीन्के लिये, वा खड़कियों वा -कीन्को
अपादान,	{ खड़कियों वा -कीन्से
सम्बन्ध,	{ खड़कियों वा -कीन्का के-की
अधिकरण,	{ खड़कियों वा कीन्में वा खड़कीयां वा -कीन्के विषय
सम्बोधन,	हे खड़कियों *

२ प्र। आकारान्त स्त्रीलिङ्ग संज्ञामें कारकोकी घटना किस प्रकारसे होती है?

उ। सो एक वचनमें ईकारान्त शब्दके समान है, परन्तु बहु वचनमें घटना इस प्रकारसे होती है; जैसा कि माता शब्द।

बहु वचन ।

कर्त्ता,	माता
कर्म,	माताको

* मुरगी, घोड़ी, घड़ी, देवी, पत्नी, भूमी, इत्यादि शब्दोंके कारकोको खड़कीके कारकोकी न्याय अभ्यास करना ।

कारण,	मातान् धर्के
सम्प्रदान,	मातान्के छिये वा मातान्के
अपादान,	मातान्से
सम्बन्ध,	मातान्का के, की
अधिकरण,	मातान्में वा मातान्के विषय
सम्बोधन,	हे मातो •

३ प्र। अकारान्त और हलन्त स्त्रीलिङ्ग संज्ञा शब्दमें कारकों-
की घटना किस प्रकारसे होती है ?

उ। एक वचनमें वेभी ईकारान्तकी समान हैं, परन्तु बङ्ग
वचनमें घटना इस प्रकारसे होती है ; जैसा कि बात शब्द ।

बङ्ग वचन ।

कर्त्ता,	बातें
कर्म,	बातोंको
कारण,	बातों कर्के
सम्प्रदान,	बातोंके छिये, वा बातोंको
अपादान,	बातोंसे
सम्बन्ध,	बातोंका के, की
अधिकरण,	बातोंमें वा बातोंके विषय
सम्बोधन,	हे बातो †

४ प्र। उपमार्थमें सम्बन्ध कारकके प्रत्ययकी बदली, जो रूप शब्द,
उसका प्रयोग होता है अथवा नहीं ?

* दया, दया, गङ्गा, गङ्गा, माता, इत्यादि शब्दोंके कारकोंको माता शब्दके
कारकोंकी न्याई अभ्यास करना ।

† घास, घूप, घूस, घूस, कनेल, चाल, इत्यादि शब्दोंके कारकोंको बात
शब्दके कारकोंकी न्याई अभ्यास करो ।

उ। हाँ, होता है; जैसा कि, समुद्र रूप विद्या, विषय मय।

प्र। संज्ञामें कोई ऐसा योग है, कि जिससे उसकी संख्या समझी जाय?

उ। हाँ, वे हैं; गण, लोग, जाति, इत्यादि; जैसा, मनुष्य प्राण, पौष्टिक लोग, पशु जाति, राक्षस, एक ठौर, पांच भात, नदी सब, वागर समूह।

५ पाठ ।

गुणवाचकके विषे।

१ प्र। गुणवाचक किसको कहते हैं?

उ। जिन सब बातोंसे गुण कहा जाय, उन्हींको गुणवाचक कहते हैं; जैसा कि आनी. दयावान्, दयालु।

२ प्र। गुणवाचक शब्दकी संख्या और कारक हैं क्या नहीं?

उ। नहीं, उसमें विशेष संख्या अथवा कारक नहीं हैं; परन्तु जो संज्ञाभर समझनेसे, उसमें संख्या और कारककी योजना किई जाती है; जैसा दुःखी, दुखियों वा -खीन् को, का, के, की इत्यादि।

३ प्र। गुणवाचक शब्दका लिङ्ग कैसे निर्णय किया जाता है?

उ। मपुंसक लिङ्गके विषे गुणवाचक शब्दसे जो प्रत्यय है, मत् और वत् उसको पुल्लिङ्गमें मान् और वान् होता है; जैसा कि, श्रीमत् श्रीमान्, रूपवत् रूपवान्। परन्तु स्त्रीलिङ्गमें मती और वती होता है; जैसा, श्रीमत् अमती, रूपवत् * रूपवती।

* बुद्धिमत्, चतुर्मत्, मानुमत्, नाग्यवत्, धनवत्, ज्ञानवत्, इत्यादिशब्दोंके कारक भीमत् वा रूपवत्, शब्दके कारककी न्याई अभ्यास करो।

और सब शब्दोंका पक्षसे चिह्नकी गारि जानना, जैसा. सुन्दरी, भूषा भूषी * ।

४ प्र। गुणवाचकमें और विशेष किस प्रकारसे किया जाता है।

उ। और विशेष तर वा तम शब्दों प्रत्ययोंसे किया जाता है; जैसा कि, शिष्ट शिष्टतर शिष्टतम, अर्थात् शिष्ट, शिष्टसेभी शिष्ट, अति अथवा अत्यन्त शिष्ट § ।

* दण्ड, छपास, कासा, चूना, पीसा, इत्यादि शब्दोंको सुन्दर वा भूषा शब्दकी समान अभ्यास करो ।

§ मङ्ग, मङ्गल, सुशोभ, शान्त, दुःशोभ, दुष्ट, भद्र, कठोर, कोमल, नम्र, इत्यादि सब शब्दोंको शिष्ट शब्दकी समान अभ्यास करो ।

तृतीय खण्ड ।

सर्वनामके विषयमें ।

१ पाठ ।

१ प्र। सर्वनाम किस्को कहते हैं?

उ। मैं, तू, वह, इत्यादिके समान शब्दोंको सर्वनाम कहते हैं।

२ प्र। यह सर्वनाम किस् प्रकारसे समझा जाता है?

उ। सो केवल संज्ञाकी बदली होके देखनेमें आवता है, जैसा ईश्वर पुण्यवान्को भेदा जागता है, परन्तु वह पापियोंपर धिना करता है।

३ प्र। सर्वनाम कै भौतिका है?

उ। नामवाचक, सम्बन्धवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, अधिकार और गौरव सहित, और प्रश्नवाचक, इन भेदोंसे सर्वनाम छः प्रकारका है।

४। नामवाचक सर्वनामके कारक किस् प्रकारसे रचे जाते हैं?

उ। वे संज्ञाकी न्याईं इस प्रकारसे रचे जाते हैं।

पुंलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग नपुंसकलिङ्ग इन तीनों लिङ्गमें।

एक वचन ।

बहु वचन ।

कर्त्ता,	मैं	कर्त्ता,	हम
कर्म,	मुझको वा मुझे	कर्म,	{ हमको वा हमों
करण,	मुझ कर्के	करण,	{ को वा हमें
सम्प्रदान,	{ मेरे लिये वा	सम्प्रदान,	{ हम कर्के वा
	मुझको		{ हमों कर्के
			{ हमारे लिये वा
			{ हमको वा हमें

अपादान, मुझसे
सम्बन्ध, मेरा, -रे, -री
अधिकरण, { मुझमें वा मेरे
विषय

अपादान, हमसे
सम्बन्ध, हमारा, -रे, -री
अधिकरण, { हममें वा हमारे
विषय

परन्तु बड़ा वचनका अर्थ निश्चय करनेके लिये हम शब्दके आते
सब शब्दका योग होता है इस प्रकारसे।

कर्त्ता,
कर्म,
करण,
सम्प्रदान,
अपादान,
सम्बन्ध,
अधिकरण,

हम सब
हम सबको वा -सभीको
हम सब कर्के वा -सभी कर्के
हम सबके लिये वा -सभीके लिये
वा हम सबको वा -सभीको
हम सबसे वा -सभीसे
हम सबका, -के, -की वा -सभीका,
के, -की
हम सबमें वा -सभीमें वा हम
सबके विषय वा -सभीके विषय

एक वचन।

बड़ा वचन।

कर्त्ता, तू
कर्म, तुम्हें वा तुम्हें
करण, तुम्हें कर्के
सम्प्रदान, तेरे लिये वा तुम्हें
अपादान, तुम्हें
सम्बन्ध, तेरा, -रे, -री
अधिकरण, { तुम्हें वा तेरे
विषय
सम्बोधन, हे तू

कर्त्ता, तुम्हें
कर्म, तुम्हें वा तुम्हें
करण, { तुम्हें कर्के वा
तुम्हें कर्के
सम्प्रदान, { तुम्हारे लिये.
तुम्हें वा तुम्हें
अपादान, तुम्हें वा तुम्हें
सम्बन्ध, तुम्हारा, -रे, -री
अधिकरण, { तुम्हें-तुम्हें
वा तुम्हें
विषय
सम्बोधन, हे तुम्हें

परन्तु वङ्गवचनका अर्थ निश्चय करनेके लिये हम सब शब्दकी समान तुम् सब शब्दकोभी जानना ।

एक वचन ।

वङ्ग वचन ।

कर्त्ता,	वह	कर्त्ता,	वे
कर्म,	उसको वा उसे	कर्म,	{ उनको वा उन्हें को वा उन्हें
करण,	उसके	करण,	{ उन् वा उन्हीं- के
सम्प्रदान,	{ उसके लिये वा उसको	सम्प्रदान,	{ उनके लिये, वा उन् वा उन्हींको
अपादान,	उससे	अपादान,	उन् वा उन्हींसे
सम्बन्ध,	उसका, -के, -की	सम्बन्ध,	{ उन् वा उन्हीं- का, के, की
अधिकरण,	{ उसमें वा उसके विषय	अधिकरण,	{ उन् वा उन्हींमें, वा उन् वा उन्हींके विषय

परन्तु वङ्गवचनका अर्थ निश्चय करनेके लिये वे शब्दके आगे सब शब्दका योग होता है, इस प्रकारसे ।

कर्त्ता,

वे सब

कर्म,

उन्सब वा उन्सबोंको इत्यादि
सब कारकके विषय जानना ।

२ पाठ ।

सम्बन्धवाचक सर्वनामके विषय ।

१ प्र । सम्बन्धवाचक सर्वनाम किस्को कहते हैं ?

उ । जो और सो ये शब्द सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहावते हैं,
और ये किसी संज्ञा, अथवा सर्वनामके पक्षिणे कहे जाते हैं;

जैसा, जो वचन ईश्वरने कहा है, सो सत्य । जो सबका पाँखन कर्ता है सो ईश्वर ।

२ प्र । सम्बन्धवाचक सर्वनामका कारक किस् प्रकारसे होता है ?

उ । इस प्रकारसे ।

स्त्रीपुंनपुंसक विभक्तमें ।

एक वचन ।		बहु वचन ।	
कर्ता,	जो	कर्ता,	जो सब
कर्म,	जिस्को, वा जिसे	कर्म,	{ जिन् वा जि- न्हेंको, वा जिन्हें
करण,	जिस् कर्के	करण,	{ जिन् वा जि- न्हें कर्के
सम्प्रदान,	{ जिस्के लिये, वा जिस्को	सम्प्रदान,	{ जिन्को वा जि- न्हेंके लिये, जिन् वा जि- न्हेंको
अपादान,	जिस्से	अपादान,	{ जिन् वा जि- न्हेंसे
सम्बन्ध,	जिस्का; -के, की	सम्बन्ध,	{ जिन् वा जि- न्हेंका, के, की
अधिकरण,	{ जिस्में, वा जि- स्के विषय	अधिकरण,	{ जिन् वा जिन्हें- में, वा जिन्के वा जिन्हेंके विषय

एक वचन ।

कर्त्ता,	से
कर्म,	तिसको वा तिसे
करण,	तिस कर्के
सम्प्रदान,	{ तिसके लिये, वा तिसको
अपादान,	तिससे
सम्बन्ध,	तिसका, -के, -की
अधिकरण,	{ तिसमें, वा तिसके विषय

बहु वचन ।

कर्त्ता,	से सब
कर्म,	{ तिन का तिन्यों- को, वा तिनहें
करण,	{ तिन वा तिन्यों- कर्के
सम्प्रदान,	{ तिन वा तिन्यों के लिये, वा तिन वा तिन्यों-को
अपादान,	तिन् वा तिन्योंसे
सम्बन्ध,	{ तिन वा तिन्यों- का, -के, -की
अधिकरण,	{ तिन वा तिन्यों- में, वा तिनके वा तिन्योंके- विषय

१ प्रश्न । निश्चयवाचक सर्वनाम और अनिश्चयवाचक सर्वनाम किन्को कहते हैं ?

उत्तर । यह शब्द निश्चयवाचक, और कोई, कुछ ये शब्द अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहावते हैं । और इस प्रकारसे इनके कारककी घटना होती है ।

रक वचन ।		रक वचन ।	
कर्त्ता,	यह	कर्त्ता,	ये
कर्म,	इसको वा इसे	कर्म,	{ इन् वा इन्हीं- को, वा इन्हें
करव,	इस कर्म	करव,	{ इन् वा इन्हीं- कर्म
सम्पुदान,	{ इसके लिये, वा इसको	सम्पुदान,	{ इनके वा इन्हीं- के लिये, वा इन्- वा इन्हीं को
अपादान,	इससे	अपादान,	इन् वा इन्हीं से
सम्बन्ध,	इसका, -के, -की	सम्बन्ध,	{ इन् वा इन्हीं- का के, की
अधिकरण,	{ इसमें, वा इस- के विषय	अधिकरण,	{ इन् वा इन्हीं में, वा इन् वा इन्हीं के विषय

रक वचन ।		रक वचन ।	
कर्त्ता,	कोई	कर्त्ता,	सब कोई
कर्म,	किसीको	कर्म,	{ किन् वा किन्हीं को
करव,	किसी कर्म	करव,	{ किन् वा किन्हीं कर्म

सम्प्रदान,	{ किसीके दिये वा किसीको	सम्प्रदान,	{ किन्हे वा कि- न्होंके दिये, वा किन्-वा किन्हों- को
अपादान,	किसीसे	अपादान,	किन्-वा किन्हों-से
सम्बन्ध,	{ किसीका, -के- की	सम्बन्ध,	{ किन्-वा किन्हों- का, -के, -की
अधिकरण,	{ किसीमें, वा किसीके वि- षय	अधिकरण,	{ किन्-वा किन्हों में, वा किन्के- वा किन्होंके-वि- षय

एक वचन ।

कर्ता,	कुछ
कर्म,	किसूको
करण,	किसकर्के
सम्प्रदान,	किसूके दिये, वा किसूको
अपादान,	किसूसे
सम्बन्ध,	किसूका, -के-की
अधिकरण,	किसूमें, वा किसूके विषय

परन्तु कुछ शब्द से बड़ा वचन नहीं होता ।

३ पाठ ।

अधिकार और गौरव सहित, और

प्रश्नवाचकके विषय ।

१ प्रश्न । अधिकार और गौरव सहित सर्वनाम किन्को कहते हैं?

उत्तर । आप और अपना इन दोनोंको अधिकार और गौरव
सहित सर्वनाम कहते हैं । और इस प्रकारसे कारककी घटना
होती है ।

एक वचन ।		बहु वचन ।	
कर्त्ता,	आप	कर्त्ता,	आप लोग
कर्म,	आपको, अपनेको	कर्म,	{ आपलोगों-वा -लोगन्-के, अपनेलोगों-वा -लोगन् को
करण,	{ आपको, अप- ने कर्के	करण,	{ आपलोगों वा -लोगन्-कर्के, अपनेलोगों-वा -लोगन् कर्के
सम्प्रदान,	{ आपके लिये वा आपको. अप- ने लिये वा अ- पनेको	सम्प्रदान,	{ आपलोगों-वा -लोगन् के लि- ये, अपनलोगों वा-लोगन् को
अपादान,	{ आपसे वा अपनेसे	अपादान,	{ आपलोगों वा लोगन् से, अप- नेलोगों वा लोगन् से
सम्बन्ध,	{ आपका,-के, -की, वा अपना, ने, नी	सम्बन्ध,	{ आपलोगों वा लोगन्-का, -के, की, अपन लोगों-वा लो- गन् का, के, की

अधिकरण,

{ आपमें, वा आप-
पके विषय, अ-
पनेमें, वा अप-
नेके विषय

अधिकरण,

{ आपसोगों-वा
-सोगान्-में आप
सोगों- वा -सो
गन्-के विषय,
अपने सोगों-वा
सोगान्-में वा
अपने सोगों-
वा सोगान्-के
विषय

२ प्रश्न । प्रश्नवाचक सर्वनाम किन्को कहते हैं ?

उत्तर । क्या, और कौन, इन् दोनोंको प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसा, यह क्या है ? कौन मनुष्य जाता है।

३ प्रश्न । इनके कारकोंकी घटना किस् प्रकार से होती है ?

उत्तर । इस प्रकारसे ।

तीनों स्थितियोंमें ।

एक वचन ।

कर्त्ता,	कौन
कर्म,	किस्को, वा किसे
करण,	किस्कर्के
सम्प्रदान,	{ किस्के लिये, वा किस्को
अपादान,	किस्से

बहु वचन ।

कर्त्ता,	कौन
कर्म,	{ किन्को, किन्हें को वा किन्हें
करण,	{ किन्- वा किन्हें कर्के
सम्प्रदान,	{ किन्- वा किन्हें के लिये, किन् वा-किन्हांको
अपादान,	{ किम्-वा-किन्हां से

सम्बन्ध,	जिस्का, -के, की	सम्बन्ध,	{ किन्-वह कि- न्होंका, -के, -की
अधिकारक,	{ किस्में, किस्के विषय	अधिकारक,	{ किन्-वह कि- न्हांमें, किन्क- वा किन्हे/के- विषय

ज्या, यह सम्बन्ध तीनों विधियोंमें है सही परन्तु असम्य है।

४ प्रश्न। कोई सर्वनाम आपसमें युक्त होने सकता है क्या कहीं!

उत्तर। हाँ होने सकता है इस प्रकारसे; जैसा, जो जो, जो कोई, जो कुछ इत्यादि; और इससे कारककी घटना करनेसे दोगे कर-
वत्त्वको पावते हैं; जैसा, जिस् जिस्को जिस् किसीका, जिस् किस्
करे इत्यादि।

बाधा सङ्गः

१ पाठ।

क्रियाके विषयमें।

१ प्रश्न। क्रिया किस प्रकारसे जानी जाती है?

उत्तर। जो बात संज्ञा अथवा सर्वनामसे उत्तरवर्ती होके वधार्थ समको अर्थात्, वही क्रिया कहावती है; जैसा बाबक बीछे, गुरु धखा वे।

२ प्रश्न। क्रिया कै प्रकारकी है?

उत्तर। क्रिया चार प्रकारकी है, अकर्मक, कर्तृवाच्य, प्रेरणार्थ, और कर्मणिवाच्य।

३ प्रश्न। कौनसी क्रिया अकर्मक कही जाती है?

उत्तर। जिन सब क्रियामें कर्त्ता का भाव वा रीति वा गुण प्रकाशित होवे वही अकर्मक क्रिया कही जाती है; जैसा, होना, जाना बैठना।

४ प्रश्न। कर्तृवाच्य क्रिया किस प्रकारसे जानी जाती है?

उत्तर। जो क्रिया अपने पक्षसे कर्म कारकको रखे वही कर्तृवाच्य क्रिया कही जाती है; जैसा, ईश्वर साधु लोगोंको प्यार कर्त्ता है, परन्तु वह पापियोंको दण्ड देता है।

५ प्रश्न। कौनसी क्रिया प्रेरणार्थ कही जाती है?

उ। कर्त्ते के जो क्रिया प्रेरणा करता है वही प्रेरणार्थ कही जाती है; जैसा, तुम सब काम कराओ।

६ प्रश्न। कौनसी क्रिया कर्मणिवाच्य कही जाती है?

उ। जो क्रिया कर्म पात्रनेको बतलाती है वही कर्मणिवाच्य कही जाती है; जैसा, काम क्रिया जाता है।

७ प्रश्न। क्रियाके नियम कितने हैं?

उ। क्रियाके नियम पाँच है; स्वार्थ नियम अनुमत्यर्थ नियम, प्रत्ययार्थ नियम, आशंसार्थ नियम, और भावमात्र वाचक नियम।

८ प्र। क्रिया पदके प्रत्ययमें एक वचन और बड़वचनका विभेद है क्या नहीं?

उ। हाँ, है; जैसा कि, मैं करता हूँ, हम करते हैं।

९ प्र। स्वार्थ नियममें का समभावता है?

उ। उसमें उक्ति अथवा प्रश्न समभाव जाता है; जैसा, मैं प्रेम करता हूँ तुम्हारा प्रेम नहीं करते हैं।

१० प्र। क्रियाका काल अथवा नियम किस प्रकारसे कहा जाता है?

उ। सो इस प्रकारसे कहा जाता है।

२ पाठ।

अकर्मक क्रियाहोना।

स्वार्थ नियम।

वर्तमान काल।

एक वचन।

मैं
तू
वह

हूँ
हो
है

बड़ वचन।

हम
तुम्
वे

हैं
हो
है

अपूर्ण भूत काल।

एक वचन।

मैं
तू
वह

था
था
था

बड़ वचन।

हम
तुम्
वे

थे
थे
थे

अद्यतन भूत काल ।

एक वचन ।

बहु वचन ।

मैं ऊवा हूँ
तू ऊवा है
वह ऊवा है

हम ऊव हैं
तुम् ऊवें हो
वे ऊवें हैं

अनद्यतन भूत काल ।

एक वचन ।

बहु वचन ।

मैं ऊवाथा
तू ऊवाथा
वह ऊवाथा

हम ऊवथे
तुम् ऊवथे
वे ऊवथे

भविष्यत् काल ।

एक वचन ।

बहु वचन ।

मैं हूंगा, वा होऊंगा
तू होगा, वा होवेगा
वह होगा, वा होवेगा

हम होंगे, वा होंगे
तुम् होंगे, वा होंगे
वे होंगे, वा होंगे

भविष्यत् भूत काल ।

एक वचन ।

बहु वचन ।

मैं हो चुकूँगा
तू हो चुकेगा
वह हो चुकेगा

हम हो चुकेगे
तुम् हो चुकेगे
वे हो चुकेगे

अनुमत्यर्थ नियम ।

१ प्र। अनुमत्यर्थ नियमसे क्या समझा जाता है ?

उ। उससे केवल आज्ञा और विन्ती समझी जाती है; जैसा कि, ईश्वरकी आज्ञानुसार पालन करो; हे प्रिय बन्धु को गो, तुम् बुरे व्यवहारोंको त्याग करो ।

२ प्र। अनुमत्यर्थ नियमकी उक्ति किस प्रकारसे किर्द जाती है?

उ। सो इस प्रकारसे।

एक वचन।

बहु वचन।

मैं	होऊं	हम	होवें
तू	हो, वा आप हूँ	तुम्	होवो, वा आपसो हों
वह	होवे	वे	होवें

प्रत्ययार्थ नियम।

१ प्र। प्रत्ययार्थ नियमसे क्या समझा जाता है ?

उ। उससे साध्यता वा शक्ति समझी जाती है; जैसा हम सब वहाँ आज पड़चने सकें; ऐसा नहीं होनेसे आज हम नहीं पड़चने सकते।

२ प्र। प्रत्ययार्थ नियमकी उक्ति किस प्रकारसे किर्द जाती है ?

उ। सो इस प्रकारसे।

वर्तमान काल।

एक वचन।

बहु वचन।

मैं	होऊं, वा होसकूँ	हम	होवें, वा होसकें
तू	होवे, वा होसके	तुम्	होवो वा होसको
वह	होवे, वा होसके	वे	होवें वा होसकें

अपूर्ण भूत काल।

एक वचन।

बहु वचन।

मैं	होसकूँ	हम	होसकूँ
तू	होसकूँ	तुम्	होसकूँ
वह	होसकूँ	वे	होसकूँ

अद्यतन भूत कालः ।

एक वचन ।

वहु वचन ।

मैं	हो सकाऊँ	हम	हो सकें ह
तू	हो सका है	तुम्	हो सकें हो
वह	हो सका है	वे	हो सकें ह

अनद्यतन भूत कालः ।

एक वचन ।

वहु वचन ।

म	हो सका था	हम	हो सकें थे
तू	हो सका था	तुम्	हो सकें थे
वह	हो सका था	वे	हो सकें थे

भविष्यत् कालः ।

एक वचन ।

वहु वचन ।

म	हो सकेगा	हम	हो सकेंगे
तू	हो सकेगा	तुम्	हो सकेंगे
वह	हो सकेगा	वे	हो सकेंगे

आशंसार्थ नियमः ।

१ प्र। आशंसार्थ नियमसे क्या समझा जाता है ?

उ। उससे अनुमानाभिलाषयन इत्यादि अन्तर्गत समझा जाता है; जैसा, जो ऐसा होय कि तुम् सत् उपदेशको ग्रहण करो, मैं सब मनुष्य तुमको भला जानेंगे।

२ प्र। आशंसार्थ नियमका काल किस प्रकारसे जाना जाता है ?

उ। सत् इव प्रकारसे है।

वर्तमान काल ।

एक वचन ।

बहु वचन ।

जो	मैं होऊँ	जो	हम होवें, वा होयें
जो	तू होय	जो	तुम्हारे
जो	वह होय	जो	वे होवें, वा होयें

अपूर्ण भूत काल ।

एक वचन ।

बहु वचन ।

जो	मैं होता	जो	हम होते
जो	तू होता	जो	तुम्हारे
जो	वह होता	जो,	वे होते

भावमात्र वाचक नियम ।

१ प्र। भावमात्र वाचकस का समझा जाता है?

उ। उससे एक वचन वा बहु वचन और कर्त्ताका गुण इनको छोड़के, केवल धातुका अर्थ समझा जाता है।

भावमात्र वाचक नियम, होना ।

००००००००

असमापिका क्रिया ।

१ प्र। असमापिका क्रिया किस्को कहते हैं?

उ। जो क्रिया समापिका क्रियाकी चाहता करे, उसीको असमापिका क्रिया कहते हैं; और वह इसी प्रकारसे कही जाती है।

क्रिया विशेषण, होके, होकर, होकरके, होकरकर।

वर्तमान, होता वा ऊँवा, एक वचन, और होते वा होते हैं बहु वचन * ।

* नित्य असमापिका इस प्रकारसे बनाई जाती है; होताए होनेए इत्यादि।

भूत, ऊर्वा, एक वचन ; और ऊने, बहु वचन ।

सांघिक क्रिया, कर्ता, होना ।

कर्म, होनेको इत्यादि सब कारक जीखन ।

३ पाठ । जाना क्रिया ।

स्वार्थ नियम ।

वर्तमान काल ।

एक वचन ।

म जाता हूँ
तू जाता है
वह जाता है

बहु वचन ।

हम जाते हैं
तुम जाते हो
वे जाते हैं

अपूर्ण भूत काल ।

एक वचन ।

म जाता था
तू जाता था
वह जाता था

बहु वचन ।

हम जाते थे
तुम जाते थे
वे जाते थे

अदतन भूत काल ।

एक वचन ।

म गया हूँ
तू गया है
वह गया है

बहु वचन ।

हम गये हैं
तुम गये हो
वे गये हैं

अन्यतन्त्र भूत कालः ।

एक वचन ।
 मैं अनाथा
 तू अनाथा
 वह अनाथा

बहु वचन ।
 हम गयेथे
 तुम् गयेथे
 वे गयेथे

भविष्यत् कालः ।

एक वचन ।
 मैं जाऊंगा
 तू जायगा
 वह जायगा

बहु वचन ।
 हम जायेंगे
 तुम् जाओगे
 वे जायेंगे

अविष्यत् भूत कालः ।

एक वचन ।
 मैं जा चुकूंगा
 तू जा चुकेगा
 वह जा चुकेगा

बहु वचन ।
 हम जा चुकेगे
 तुम जा चुकोगे
 वे जा चुकेगे

अनूमत्यर्थ नियमः ।

एक वचन ।
 मैं जाऊँ
 तू जा, वा जाय
 जाइये
 वह जाय

बहु वचन ।
 हम जाय
 तुम् जाओ, वा जाय
 जाग जाइये
 वे जाय

शतार्थ नियम ।

वर्तमान काल ।

एक वचन ।

मैं जाऊं, वा जासकूं
तू जाय, वा जासके
वह जाय, वा जासके

बहु वचन ।

हम जाय, वा जासकें
तुम जाओ, वा जासको
वे जाय, वा जासकें

अपूर्ण भूत काल ।

एक वचन ।

मैं जा सकता
तू जा सकता
वह जा सकता

बहु वचन ।

हम जा सकते
तुम जा सकते
वे जा सकते

अद्यतन भूत काल ।

एक वचन ।

म जा सका है
तू जा सका है
वह जा सका है

बहु वचन ।

हम जा सके हैं
तुम जा सके हो
वे जा सके हैं

अनद्यतन भूत काल ।

एक वचन ।

मैं जा सका था
तू जा सका था
वह जा सका था

बहु वचन ।

हम जा सके थे
तुम जा सके थे
वे जा सके थे

भविष्यत् काण्ड ।

एक वचन ।

म जा सकूंगा
तू जा सकेगा
वह जा सकेगा

बहु वचन ।

हम जा सकेंगे
तुम् जा सकेंगे
वे जा सकेंगे

आशंसार्थ नियम ।

वर्तमान काण्ड ।

एक वचन ।

जो मैं जाऊं
जो तू जाऊं
जो वह जाय

बहु वचन ।

जो हम जावें, वा जायें
जो तुम् जावो
जो वे जावें, वा जायें

अपूर्ण भूत काण्ड ।

एक वचन ।

जो मैं जाता
जो तू जाता
जो वह जाता

बहु वचन ।

जो हम जाते
जो तुम् जाते
जो वे जाते

भवमात्र वाचक नियम, अना ।

असमापिका क्रिया ।

क्रिया विशेषण, जाके, जाकर, जाकें, जाकेंकर ।

वर्तमान; जाता, वा जाता ऊवा, एक वचन; और जाते, वा जाते ऊवे, बहु वचन ।

भूत; गया, एक वचन; और गये, बहु वचन ।

सांख्यिक क्रिया, कर्त्ता, जाना । कर्म, जानेको इत्यादि सब कारक जानने ।

४ पाठः। कर्तृवाच्य क्रिया।

००००००००

कर्मा क्रिया। स्वार्थ नियम। वर्तमान काल।

एक वचन।

मैं कर्ता हूँ
तू कर्ता है
वह कर्ता है

बहु वचन।

हम कर्ते हैं
तुम कर्ते हो
वे कर्ते हैं

अपूर्ण भूत काल।

एक वचन।

मैं कर्ता था
तू कर्ता था
वह कर्ता था

बहु वचन।

हम कर्ते थे
तुम कर्ते थे
वे कर्ते थे

अद्यतन भूत काल।

एक वचन।

मैंने * किया है
तूने किया है
उत्तने किया है

बहु वचन।

हमने किये हैं
तुमने किये हैं
उन्होंने किये हैं

* कर्तृवाच्य क्रियाके अद्यतन वा अनद्यतन भूत कालमें कर्ताके सामने वे प्रत्यय अवश्य, और जो वह पहिला वा दूसरा नाम वाचक न होय, तो पहिले कारक कर्ते के प्रत्ययको समाप्त; जैसा हमने।

अनद्यतन भूत काल ।

एक वचन ।

मैंने किया था
तूने किया था
उसने किया था

बहु वचन ।

हमने किये थे
तुमने किये थे
उन्होंने किये थे

भविष्यत् काल ।

एक वचन ।

मैं करूंगा
तू करेगा
वह करेगा

बहु वचन ।

हम करेंगे
तुम करोगे
वे करेंगे

भविष्यत् भूत काल ।

एक वचन ।

मैं कर चुका हूँ
तू कर चुकेगा
वह कर चुकेगा

बहु वचन ।

हम कर चुके हैं
तुम कर चुके हो
वे कर चुके हों

अनुमत्यर्थ नियम ।

एक वचन ।

मैं करूँ
तू कर, वा आप कीजिये
वह करे

बहु वचन ।

हम करें
तुम करा, वा आप लोग कीजिये
वे करें

शक्तार्थ नियम ।

वर्तमान काल ।

एक वचन ।

मैं करूँ, वा करसकूँ
तू करे, वा करसके
वह करे, वा करसके

बहु वचन ।

हम करै, वा करसकै
तुम् करो, वा करसको
वे करै, वा करसकै

अपूर्ण भूत काल ।

एक वचन ।

मैं कर सक्ता
तू कर सक्ता
वह कर सक्ता

बहु वचन ।

हम कर सक्ते
तुम् कर सक्ते
वे कर सक्ते

अद्यतन भूत काल ।

एक वचन ।

मैं कर सका हूँ
तू कर सका है
वह कर सका है

बहु वचन ।

हम कर सके हैं
तुम् कर सके हो
वे कर सके हैं

अनद्यतन भूत काल ।

एक वचन ।

मैं कर सका था
तू कर सका था
वह कर सका था

बहु वचन ।

हम कर सके थे
तुम् कर सके थे
वे कर सके थे

भविष्यत् काल ।

एक वचन ।

मैं कर सकूँगा
तू कर सकेगा
वह कर सकेगा

बहु वचन ।

हम कर सकेंगे
तुम् कर सकेंगे
वे कर सकेंगे

आप्रसार्थ नियम ।

वर्तमान काख ।

एक वचन ।

जो मैं करूं
जो तू करे
जो वह करे

बहु वचन ।

जो हम करें
जो तुम करो
जो वे करें

अपूर्ण भूत काख ।

एक वचन ।

जो मैं कर्ता
जो तू कर्ता
जो वह कर्ता

बहु वचन ।

जो हम कर्ते
जो तुम कर्ते
जो वे कर्ते

भावमात्र वाचक नियम, कर्ता ।

असमापिका क्रिया ।

क्रियाविशेषण, कर्के, कर्कर, कर्कके, कर्ककर ।

वर्तमान; कर्ता, वा कर्ता ऊवा, एक वचन; कर्ते, वा कर्ते ऊवे
बहु वचन ।

भूत; क्रिया, एक वचन; और किये, गये, बहु वचन ।

सांज्ञिक क्रिया, कर्ता, कर्ता; कर्म कर्मको इत्यादि सब कार्य
जानने ।

५ पाठ ।

प्रेरणा क्रिया ।

१ प्रश्न। प्रेरणा क्रिया किस प्रकारसे बनाने जाती है?

उत्तर। सो स्वरूपसे कौ एक प्रकार कर्के बनाने जाती है; जैसे
जाहाना, और जलना, जलनेसे; डुबाना, और डुबाना।

डूबनेसे; दिखाना, और दिखवाना, देनेसे; धुलाना, और धुलवाना धोनेसे; और करवाना करनेसे इत्यादि।



कराना ।

सार्थ निवम ।

वर्तमान काल ।

एक वचन ।

मैं कराता हूँ
तू कराता है
वह कराता है

बहु वचन ।

हम कराते हैं
तुम कराते हो
वे कराते हैं

अपूर्ण भूत काल ।

एक वचन ।

मैं कराता था
तू कराता था
वह कराता था

बहु वचन ।

हम कराते थे
तुम कराते थे
वे कराते थे

अद्यतन भूत काल ।

एक वचन ।

मैंने कराया है
तूने कराया है
उसने कराया है

बहु वचन ।

हमने कराये हैं
तुमने कराये हैं
उन्होंने कराये हैं

अनद्यतन भूत काल ।

एक वचन ।

मैंने कराया था
तूने कराया था
उसने कराया था

बहु वचन ।

हमने कराये थे
तुमने कराये थे
उन्होंने कराये थे

भविष्यत् काल ।

एक वचन ।

मै कराऊंगा
तू करावेगा
वह करावेगा

बहु वचन ।

हम करावेगे
तुम करावेगे
वे करावेगे

भविष्यत् भूत काल ।

एक वचन ।

मै करा चुकूंगा
तू करा चुकेगा
वह करा चुकेगा

बहु वचन ।

हम करा चुकेगे
तुम करा चुकेगे
वे करा चुकेगे

अनूमत्यर्थ नियम ।

एक वचन ।

मै कराऊं
तू करा, वा आप कराइये
वह करावे

बहु वचन ।

हम करावें
तुम करावो, वा आप-
कोरा कराइये
वे करावें

शक्त्यर्थ नियम ।

वर्तमान काल ।

एक वचन ।

मै कराऊं, वा करा सकूँ
तू करावे, वा करा सके
वह करावे, वा करासके

बहु वचन ।

हम करावें वा करासकें
तुम करावो वा करासको
वे करावें वा करासकें

अपूर्व भूत कालः ।

एक वचन ।

मैं करा सकता
तू करा सकता
वह करा सकता

बहु वचन ।

हम करा सकते
तुम करा सकते
वे करा सकते

अद्यतन भूत कालः ।

एक वचन ।

मैं करा सका हूँ
तू करा सका है
वह करा सका है

बहु वचन ।

हम करा सके हैं
तुम करा सके हो
वे करा सके हैं

अनद्यतन भूत कालः ।

एक वचन ।

मैं करा सका था
तू करा सका था
वह करा सका था

बहु वचन ।

हम करा सके थे
तुम करा सके थे
वे करा सके थे

भविष्यत् कालः ।

एक वचन ।

मैं करा सकूँगा
तू करा सकेगा
वह करा सकेगा

बहु वचन ।

हम करा सकेंगे
तुम करा सकेंगे
वे करा सकेंगे

आशंसार्थ नियमः ।

वर्तमान कालः ।

एक वचन ।

जो मैं कराऊँ
जो तू करावे
जो वह करावे

बहु वचन ।

जो हम करावें
जो तुम करावें
जो वे करावें

अपूर्व भूत काण्ड ।

एक वचन ।

जो मैं कराता
जो तू कराता
जो वह कराता

बहु वचन ।

जो हम कराते
जो तुम् कराते
जो वे कराते

भावमात्र वाचक नियम; कराना ।

असमापिका क्रिया ।

क्रियाविशेषण, कराके, कराकर, कराकर्के, कराकर्कर ।

वर्तमान; कराता, वा कराता ऊवा, एक वचन । कराते, वा कराते ऊवे, बहु वचन ।

भूत; कराया, एक वचन । और कराये, बहु वचन ।

सांज्ञिक क्रिया, कर्त्ता कराना; कर्म, करानेको, इत्यादि सब कारक जानने ।



ई पाठ ।

कर्मणि वाच्य क्रिया ।

१ प्रश्न । कर्मणि वाच्य क्रिया किस प्रकारसे कही जाती है ?

उत्तर । सो इस प्रकारसे, किया जाना ।

वार्थ नियम ।

वर्तमान काण्ड ।

एक वचन ।

मैं किया जाता हूं
तू किया जाता है
वह किया जाता है

बहु वचन ।

हम किये जाते हैं
तुम् किये जाते हो
वे किये जाते हैं

अपूर्ण भूत काल ।

एक वचन ।

बहु वचन ।

मैं किया जाता था
तू किया जाता था
वह किया जाता था

हम किये जाते थे
तुम किये जाते थे
वे किये जाते थे

अद्यतन भूत काल ।

एक वचन ।

बहु वचन ।

मैं किया गया है
तू किया गया है
वह किया गया है

हम किये गये हैं
तुम किये गये हो
वे किये गये हैं

अनद्यतन भूत काल ।

एक वचन ।

बहु वचन ।

मैं किया गया था
तू किया गया था
वह किया गया था

हम किये गये थे
तुम किये गये थे
वे किये गये थे

भविष्यत काल ।

एक वचन ।

बहु वचन ।

मैं किया जाऊंगा
तू किया जायगा
वह किया जायगा

हम किये जायगे
तुम किये जावोगे
वे किये जायगे

भविष्यत भूत काल ।

एक वचन ।

बहु वचन ।

मैं किया जा चुकांगा
तू किया जा चुकेगा
वह किया जा चुकेगा

हम किये जा चुकेगे
तुम किये जा चुकोगे
वे किये जा चुकेंगे

अनुमत्यर्थ नियम ।

एक वचन ।

मैं किया जाऊँ

तू किया जा, वा आप किये
जाइये

वह किया जाय

बहु वचन ।

हम किये जाय

तुम् किये जाओ, वा आप-
सों किये जाइये

वे किये जाय

शक्त्यर्थ नियम ।

वर्तमान काल ।

एक वचन ।

मैं किया जाऊँ, वा किया
जासकूँ

तू किया जा, वा किया
जासके

वह किया जाय, वा किया
जासके

बहु वचन ।

हम किये जाय, वा किये
जासकें

तुम् किये जाओ, वा किये
जासको

वे किये जाय, वा किये जा सके

अपूर्ण भूत काल ।

एक वचन ।

मैं किया जा सकता

तू किया जा सकता

वह किया जा सकता

बहु वचन ।

हम किये जासकते

तुम् किये जासकते

वे किये जासकते

अद्यतन भूत काल ।

एक वचन ।

मैं किया जा सका है

तू किया जा सका है

वह किया जा सका है

बहु वचन ।

हम किये जासके हैं

तुम् किये जा सके हैं

वे किये जा सके हैं

अन्यतन भूत काल ।

एक वचन ।

मैं किया जा सकाथा
तू किया जा सकाथा
वह किया जा सकाथा

बहु वचन ।

हम किये जा सकेंथे
तुम् किये जा सकेंथे
वे किये जा सकेंथे

भविष्यत् काल ।

एक वचन ।

मैं किया जा सकूंगा
तू किया जा सकेगा
वह किया जा सकेगा

बहु वचन ।

हम किये जा सकेंगे
तुम् किये जा सकेंगे
वे किये जा सकेंगे

—०००—

आशंसार्थ नियम ।

वर्तमान काल ।

एक वचन ।

जो मैं किया जाऊं
जो तू किया जाय
जो वह किया जाय

बहु वचन ।

जो हम किये जावें, वा जांय
जो तुम् किये जायें
जो वे किये जावें, वा जांय

अपूर्ण भूत काल ।

एक वचन ।

जो मैं किया जाता
जो तू किया जाता
जो वह किया जाता

बहु वचन ।

जो हम किये जाते
जो तुम् किये जाते
जो वे किये जाते

भावमात्र वाचक नियम, किया जाना ।

असमापिका क्रिया ।

क्रिया विशेषण, किया जाके, किया जाकर, किया जाकर्क, किया जाकर्कर ।

वर्त्तमान; किया जाता, वा किये जाता ऊरा, एक वचन । और किये जाते, वा किये जाते ऊवे, बड़ वचन ।

भूत; किया गया, एक वचन । और किये गये, बड़ वचन ।

सांघिक क्रिया, कर्त्ता । किया जाना । कर्म, किया जानेको, इत्यादि सब कारक जानने ।

७ पाठ ।

१ प्रश्न । नकार सहित क्रिया किस प्रकारसे कही जाती है ?

उत्तर । जिस क्रियाके साथ नहीं, वा न, वा मत, इनका योग होय, वही नकार सहित क्रिया कहलाती है; परन्तु इनमेंसे मतका केवल अनुमत्यर्थके साथ योग होता है; जैसा कि, मैं ने नहीं किया, वह न करे, तू मत कर ।

२ प्र । निश्चयका बोधक जो सही इसका योग किस प्रकारसे होता है ?

उ । सो वह इस प्रकारसे योग किया जाता है; जैसा मैं सही, हम सही इत्यादि ।

३ प्र । एक क्रियामें दूसरी क्रिया संयुक्त होती है अथवा नहीं ?

उ । हाँ बड़त् ।

१ आशंसार्थ नियममें क्रिया विशेषण असमापिका क्रियामें होना मिला है; जैसा कि, जो मैंने किया होय, जो तूने किया होय, जो उसने किया होय इत्यादि ।

२ क्रियाका सम्पूर्ण रूपसे कर्म सिद्ध करनेसे जो अनुमान होय, उस समयमें क्रिया विशेषण असमापिका क्रियामें डाबूँ, फौबूँ, चुकूँ इनका संयोग होय; जैसा, मैं करडाबूँ, मैं लिख फौबूँ, मैं कर चुकूँ ।

३ जब कर्मके आरम्भका अनुमान होय, तब वर्तमान असमापिका क्रियामें लगा यह संयुक्त होय ; जैसा कि, आज मैं विद्या सीखनेको लगा, वे काम कर्मको लगे।

४ जब किसी काम करनेमें कर्त्ताकी सामर्थ्य कही कही जाय, तब असमापिका क्रियामें सकूँकायोग होय ; जैसा कि मैं करने सकूँ, वे करने सकूँ।

५ जब किसी काममें कर्त्ताकी कर्मके लिये इच्छा प्रकाशित होय, तब असमापिका क्रियामें चाहना कभीर संयुक्त होय ; जैसा कि, मैं सीखने चाहता हूँ, वे देखने चाहते हैं।

६ जब कोई काम करनेके लिये कर्त्ताका कोई वस्तु वा भोग रहै, तब असमापिका क्रियामें पावनेका संयोग होय ; जैसा कि, मैं देखने पाऊँ, वे देखने पावें।

२ प्रश्न। प्रेरणार्थ क्रियामें संयुक्तक्रिया मिथे वा नहीं?

उत्तर। हाँ मिथे सच्चि, परन्तु अति सामान्यसे नहीं।

पाँचवां खण्ड ।

॥११३३३॥

१ पाठ ।

क्रिया विशेषण के विषयमें ।

१ प्रश्न । क्रिया विशेषण किसको कहते हैं ?

उत्तर । सो एक वाक्य है, क्रिया और गुणवाचक, अथवा और क्रिया विशेषण बातके प्रति है, उसके द्वारा इन्हीं सब वाक्योंके विषय के एक गुण, वा समय, वा स्थान, और रीति समझी जाय; जैसा कि, वाशकने ज्ञान पूर्वक रचना किई है, यह बड़त भला पुत्र होके, सुन्दर सिद्धता है ।

२ प्र । क्रिया विशेषण किस प्रकारसे जाना जाता है ?

उ । कैसा ! कितना ! कब ! कहाँ ! इस भाँतिसे सब प्रश्नका उत्तर साधारण रीतिसे क्रिया विशेषण होता है; जैसा कि, कैसा है ? भला । कितना मोक्ष ? बड़त । कब जायगा ? तीसरे पहर । कहाँ जाने चाहते हो ? इसी ओर ।

२ पाठ ।

पार्श्ववर्त्तिके विषयमें ।

१ प्रश्न । पार्श्ववर्त्ती बात के प्रकारकी है ?

उत्तर । उपसर्ग और परवर्त्तीके भेदसे बह् दो प्रकारकी है ।

२ प्र । उपवर्त्ता गिन्तीमें कितने होंगे ?

उ । सबसुद्धां उपसर्ग गिन्तीमें बीस हैं, जैसा ।

प्र	परा	अप	सम्	अनु
अन	निर	दुर्	वि	आह
नि	अभि	अपि	अति	कु
उत्	अभि	प्रति	परि	उप

३ प्र। इन दोस उपसर्गोंका गुण क्या है?

उ। वे सब कभीर शब्दके अनुवर्ती, वा शब्दके उल्टे, अथवा शब्दके उद्दीपक होते हैं; जैसा, आशा, प्रत्याशा, निराशा, सुआशा।

४ प्र। किन् शब्दोंको परवर्ती कहते हैं?

उ। तबे	सहित	बङ्ग	सह
साथ	ऊपर	नीचे	पास
कारण	निमित्त	द्विजे	द्वारा
सग	निकट	बीच	मध्य
हेतु	विना	व्यतिरेक	बतौर
कर्तृक	करखर	पूर्वक	होके
देके	कके	अवधि	पर्यन्त
का	परे	पश्चात्	पश्चात्
आगे	ठिकाने	समीप	पीछे
विपरीत	समुख	दूर	इत्यादि।

वे सब शब्द परवर्ती प्रसिद्ध हैं।

३ पाठ ।

यौगिक शब्दके विषयमें।

१ प्रश्न। यौगिक शब्द यौगिक कचखावते हैं?

उ। एवं	वरं	और	परन्तु
क्योंकि	जिसद्विजे	क्या	किन्वा
अथवा	तब	वा	अतएव

इसीसे	इतदर्थ	इस्कारण	इस्बिन्द
इसीनिमित्त	तबभी	तो	जो
तथापि	कदाचित्	नहींतो	दूसरा
अथापि	यदि	तथा	यथा
अथपि	अन्तर	अपर	किन्तु

इत्यादि सब शब्द यौगिक कहावते हैं।

१ प्र। इन सबका क्या गुण है?

उ। ये सब वाक्यकी रचनामें संयुक्त होते हैं; जैसा कि, जो तुम्हें और हम विधानो नहीं सीखें, तो मूर्ख होकर रहेंगे।

४ पाठ ।

आक्षेपकी उक्तिके विषयमें।

१ प्र। आक्षेपकी उक्तिके क्या समभावता है?

उ। उससे बलाका शब्द प्रमाण समभावता है; जैसा, आः क्या दुःख है! हाय कैसी ग्लाना है! उः कैसी पीड़ा है!

अहे, ओहे, अरे, काहे, ओ, भो, हे! ये सब शब्द आक्षेपोक्ति दूरवर्ती व्यक्ति के पूर्वमें होते हैं, जैसा अहे देवदत्त! काहे रामदत्त! अरे बावची!

हे, हो, हेतु, रे, ये सब आक्षेपोक्ति वर्तमान व्यक्ति के आगेमें होते हैं, जैसा कि, भाई हे! ठकुर दत्त हो! साधगराम हेतु! मटियारे।

छठा खण्ड।

१ पाठ।

रचनाकी रीतिके विषयमें।

१ प्र। वाक्यकी रचनामें कर्ता, कर्म, क्रिया, इन्हीं किसप्रकारसे घटना होती है?

उ। इसरीतिसे।

१ जो केवल कर्ता कर्म क्रियासे वाक्यकी रचना होय, तब कर्ता पहिले, कर्म दूसरे, क्रिया तीसरे होय; जैसा, राजा मन्त्रीको आज्ञा देता है।

२ जो बड़ी बातें होय, तब सब बातें कर्ताके आगेमें कही जाय, जैसा कि, एक दुष्ट लोग राजाके आगे प्रधान मन्त्रीकी बड़ी निन्दा करता है।

३ गुणवाचक शब्द संज्ञाके पहिले रखना चाह्य; जैसा सद्गुरु आपकी अटकलसे विषयको दख देता है।

४ जो वाक्यकी रचना खम्बी होय, अथवा नामा प्रकारकी बातें शब्द क्रियाके कर्मकारकका निर्णय करें; तब यही बड़ी बात पहिले कही जाय, पीछे इन् सबके द्वारा निर्णय ऊई जो बात, वह कर्म कारकके प्राप्त होनेसे पीछे, क्रियाका कर्ता उक्त होय; जैसा, जो बालक पैठके पिछाको सीखे और सदा विद्याके सीखनेमें लगा रहै, कर्ता पण्डित लोग भला जानते हैं।

—•••••

सातवां अध्याय ।

मिथानेके विषयमें ।

००००००००

१ पाठ ।

१ प्रश्न । संज्ञामें गुणवाचकका मेख है क्या नहीं ?

उत्तर । हाँ सिद्धमें है; जैसा, उत्तम पुरुष, अच्छी स्त्री ।

२ प्र । क्रिया अपने कर्त्ताके साथ मिश्रें क्या नहीं ?

उ । हाँ, जैसा, मैं पाठ करूँ, तू लिख, हम गुरु बताय दे ।

३ प्र । जो इत् सर्वनाम सर्वनाममें वे और से आकर्षित होके समान सिद्ध संज्ञा होती है अथवा नहीं ?

उ । हाँ होती है; जैसा, जो शिक्षाको देते हैं वेही मानवान् हैं । जो भखी वस्त्र है सोई मँहंगी है ।

४ प्र । जो कदाचित् सर्वनाम और क्रियाके मध्यमें कर्त्ता नहीं पाया जाय, तो सर्वनाम किसकारकके साथ युक्त होगा ?

उ । कर्त्ता कारकके साथ युक्त होगा; जैसा, जो ईश्वर पर विश्वास लावते हैं, वे धन्य हैं ।

५ प्र । परन्तु जो कर्त्ता पाया जाय, तो सर्वनाम किस कारकमें युक्त होगा ?

उ । पिछली क्रिया वा पासका शब्द जिस कारकको धरे, तिसीमें सर्वनाम पाया जायगा; जैसा, जो वह ईश्वरको सेवा कर्त्ता, तो ईश्वर उसीसे प्रेम कर्त्ता है; जो वाचक मूर्ख होके रहेगा, उसीके ऊपर बड़ी खिन्ना पड़ेगी ।

२ पाठ ।

१ प्र। और, ओ, वे दो यौगिक शब्द समभाव कारक और क्रियापद और कालको चाहैं क्या नहीं?

उ। हाँ जैसा कि, मैंने राजाको और मन्त्रीको देखा, ओ निवेदन किया।

२ प्र। और, ओ, एवं इन तीन यौगिक शब्दोंमें दो तीन संज्ञा मिलनेसे, उनके साथ गुणवाचक और सम्बन्ध सर्वनाम क्रिया मिलित होने सके क्या नहीं?

उ। हाँ, सो सही, पाठशाळामें जो विद्यामें निपुण थे वे मौरी-गाथ, और बन्धू सिंह, एवं बेखीराम; परन्तु एक शिक्षा विशेष शिक्षा होनेसे, सभीसे पुष्तिष्ठ पाछा होय; जैसा कि, रामदास और उसकी स्त्री एवं उसका बेटा और उसकी बेटी सभी सुन्दर हैं।

३ प्र। दो तीन कर्त्ताकी एक क्रिया होनेसे, क्रियाकी तर्कना कैसे किई जाय?

उ। तूम और वे शब्दसे हम् शब्दकी क्रियाकी तर्कना होय; जैसा कि हम् पाठशाळामें जायेंगे, तूम और वे पण्डित होवेंगे।

४ प्र। संज्ञामें तुल्य वस्तु बुझानेसे, आपसमें मेल होय या नहीं?

उ। हाँ; जैसा कि, गाड़ देश कलकत्ता नगरी, ईश्वर पाछन कर्त्ता।

पाठवां खण्ड ।

जातका अधिकार ।

१ पाठ ।

संज्ञा के विषयमें ।

१ प्र। एक संज्ञा विशेषका बोधक और संज्ञाके ऊपर व्यापक है क्या नहीं?

उ। हाँ, वह सम्बन्ध कारकके पदमें ही है; जैसा कि, ईश्वरका प्रेम अनन्त है। विद्याका ज्ञान बड़त् मसंगा है।

२ प्र। जिस संज्ञामें निमित्त अथवा रीति समझी जाय, को कित् कारक पदको थापे?

उ। करणकारक को; जैसा, उसने उसको सेटिसे मारा; परन्तु किसी समयमें करण कारक नहीं होनेसे, कर्के, देके कहा है; जैसा कि, मैं गाड़ीकर्के आय हूँ। उसने कुरीदेके काठ डाखा।

२ पाठ ।

क्रियाके विषयमें ।

१ प्र। कर्तृवाच्य क्रिया कित् कारक पदको थापे?

उ। कर्म कारकको; जैसा कि, पण्डित जन मूर्खको तुच्छ कहते हैं।

२ प्र। अकर्मिका क्रिया कभी कर्म पदको थापे वा नहीं?

उ। हाँ थापे, परन्तु, प्रेरणार्थ पदमें है; जैसा मैं उसको पछाड़, आगने उसको जलाया।

३ प्र। जब वर्तमान असमापिका क्रियाके परे होना क्रिया भिन्ने, तब कित् पदको थापे?

उ। कर्म बदको चाये, क्योंकि, उसमें आवस्यकता समझी जाय;
जैसा कि, मुँजको कर्म होय, तुम्को कर्म ऊवा, उसको कर्म होगा।

* प्र। जब कर्म बाध्य क्रिया जानेके साथ कर्मणि बाध्य होय, तब
वह कर्म कारकको चाये क्या नहीं?

उ। हाँ; जैसा कि, दुष्टजन पराये किये उपकारको नहीं मान-
ता है, इसीसे वह पहचाना जाय, परन्तु सत् कर्मसे साधुको पह-
चाना जाय।

५ प्र। होना क्रियामें अधिकार समझानेसे, किस्कारकको चाये?

उ। सम्बन्ध कारकको; जैसा, हमारा होय, तुम्हारा होय,
उन्का होय।

६ प्र। कर्मणि बाध्य क्रियाका वर्तन किस् कारकके साथ संयुक्त
होय?

उ। करण कारक वा अपादानके साथ; जैसा कि, वे आग कर्म
वा आगसे जल गवैथे।

७ प्र। क्रिया सिद्ध कर्मके किये शब्दमें करण क्रिया संयुक्त होनेसे
किस् कारकको चाहे?

उ। सम्बन्ध अथवा कर्म कारकको; जैसा, जो ईश्वरको सेवा नहीं
कर्ते, उन्को वह अंगनत दण्ड दया।

८ उ। पैठना, रङ्गना, ऐसी गित्सी क्रिया हैं, वे किस्कारकको
चाहती हैं?

उ। अधिकारको; जैसा, वह मन्दिरमें पैठा है, वह बनारसमें
रहा है।

९ उ। पड़ना, पावना, जाना, ऐसी सब क्रिया अपादान कारकको
चाहै है क्या नहीं?

उ। हाँ चाहै है; जैसा कि, बच्चेसे पता पड़ा। वे मैंने उससे
प्राया है। वह घरसे प्रयागको गया।

१० प्र। कौनकर क्रिया देा कर्मको ध्यापे?

उ। देना, सिखाना, इस्भाँतिको जितनी क्रिया है वे सब देा कर्मको ध्यापे; जैसा कि, तुम् उसको धनदेको वह उसको ध्याकर सिखाता है।

११ प्र। कौनसी क्रिया अपादान और कर्मको ध्यापे?

उ। चाहना, प्रार्थना, मांगना, ऐसी जितनी क्रिया है, वे सभी अपादान और कर्म कारकमें ध्यापे; जैसा कि, तुम्हारे ईश्वरसे समझ चाहि। दरिद्री लोग भागवानसे धनको प्रार्थना करते हैं; जे कोई बुद्धिहीन होवे तो वह ईश्वरसे मांगे और वह उसे दिख जायगा।

इ पाठ ।

असमायिका क्रियाके विषयमें।

१ प्र। वर्तमान असमायिका क्रिया कब उक्त होय ?

उ। कर्ताके विषयमें कुछ समझ पडनेसे असमायिका क्रिया उक्त होय; जैसा कि, साधु लोग ईश्वरका ध्यान करते, समस्त लोगनका कल्याण करने चाहते हैं।

२। कर्मके विषयमें कोई रीति समझनेसे, होते यह वर्तमान असमायिका क्रिया उक्त होय; जैसा कि, धिक्का नहीं होते वह सूत गया।

३ प्र। होने यह असमायिका क्रिया कभी सांज्ञिक क्रिया समझी जाय क्या नहीं?

उ। हाँ, वह सांज्ञिक क्रियाके स्थानमें पाईजाय; जैसा कि, हम सबके लिये उसको प्राण लग देनेको उद्यत होने चाहिये।

४ प्र। नित्य असमायिका क्रिया कब उक्त होती है?

उ। जो कभी उसमें वर्तमान अन्तर्गत होय, सबभी क्रियाकी

असमाप्ति पर्यन्त, वह उक्त है; जैसा, काम कर्त्तर प्राप्ति जाता है।

४ प्र। क्रियाविशेषण असमाप्तिका क्रिया किस् समयमें कही है?

उ। जब एक कर्त्ताके द्वारा अनेक बातें मिलें, तब यह असमाप्तिका क्रिया कही है; जैसा कि, बालक अपनी सन्धाको कण्ठकर्त्ते घर्को गया।

२। जो नानान् प्रकारकी आवने हारी क्रियाविशेष कर्त्ताके द्वारा किई होय; जब उसके अधीन कोई क्रिया रहै, तभी जो क्रियाविशेषण असमाप्तिका क्रिया कही जाय; जैसा कि, तुम्हारे आदर करनेसे वह आवेगा।

५। होनेसे क्रियाविशेषण कभीर आशंसार्थके बदलेमें होय क्या नहीं?

उ। हाँ, जब कोई बात ठीक कही होय, जो कोई काम सिद्ध होगा, अथवा कोई फल प्राप्त होगा, जो दिई रीति उपस्थित होय, तभी; जैसा कि, तू मूर्ख होनेसे घिनावना होगा, अर्थात् जो तू मूर्ख होगा, तब घिनावना होगा।

—००००—

४ पाठ ।

सांज्ञिक क्रियाके विषयमें।

१ प्र। सांज्ञिक क्रिया किस् प्रकारसे व्याप्ती है?

उ। सांज्ञिक क्रिया संज्ञाकी म्यार्ई, ओर ए प्रत्ययान्त होनेसे मात्रका योग होय; जैसा, साधु लोग मर्ने मात्रसे स्वर्गमें जाते हैं।

२ प्र। नेके प्रत्ययान्त सांज्ञिक क्रिया किस्के पासमें व्याप्ती है?

उ। लिखे, कारण, निमित्त, इत्यादिके पासमें व्याप्ती है; जैसा, मैं बातचीत करनेके लिये आया हूँ।

१ प्र। नेक प्रत्ययान्त सांज्ञिक क्रियाको किसीर समय गुणवाचक समझाने का नहीं?

उ। हाँ; जैसा, आश्चर्यजनकी अवस्था सीखनेका समय है।

२ प्र। किस प्रकारसे किया जाय?

उ। क्रियाके पहिले का, वा कौन, वा कौन कहनेसे प्रश्न होय जैसा, तुम् का चाहते हो? वह कौन आया है? वह कौन आवता है?

३ प्र। निश्चित वाक्य कभीर प्रश्नकी न्याई कहा जाता है का नहीं?

उ। हाँ; जैसा, साधु लोग का विनाशको पावेंगे, अर्थात् नहीं पावेंगे। मैं का विद्याको नहीं सीखूंगा? अर्थात् सीखूंगा।

५ पाठ ।

परवर्तीके विषयमें।

१ प्र। परवर्तीके मध्यमें कौनर शब्द संज्ञाके सम्बन्ध कारकके आगेमें होता है?

उ। तबे, हाथ, सहित, सङ्ग, साथ, ऊपर, नीचे, पास, समीप, कारण, निमित्त, लिये, द्वारा, मध्य, बीच, परे, पहिले, पश्चात्, पीछे, आगे, निकट, समुख, साक्षी, ये सब परवर्ती शब्द सम्बन्ध कारकके आगेमें होते हैं; जैसा कि, उसके तबे, मेरे पास, तेरे सङ्ग।

२ प्र। परवर्तीके मध्यमें कौनर शब्द सांज्ञिक क्रियाके मध्यमें आये?

उ। हेतु, कारण, निमित्त, लिये, परे, पूर्व, पहिले, पीछे, पश्चात्, ये सब सांज्ञिक क्रियाके सम्बन्ध कारकमें आये; जैसा कि, कर्मके हेतु, होनेके पहिले, जानेके लिये; उठनेके पीछे।

३ प्र । परवर्तीके मध्यमें कौनसे शब्द सम्बन्ध कारकको व्यापनेसे अधिकरण समझा जाय ?

उ । मध्य, बीच, इन् दो शब्दोंमें समझा जाय ; जैसा कि, समझ मध्य, यानीके बीच ।

४ प्र । अपादान कारक जिससे समझा जाय, ऐसा कोई शब्द परवर्तीयोंमें है, क्या नहीं ?

उ । हाँ है, पास, साथ, ये दोनों परवर्ती शब्दोंके परे, प्राप्तरथ क्रिया रहनेसे, अपादान समझा जाय ; जैसा उसके पास मने पाया, अर्थात् उससे पाया ।



अवम सुख ।

१ पाठ ।

समासके विषयमें।

१ प्र। समास के प्रकार हैं?

उ। समास छः प्रकार है; जैसा ।

१ इन्द्र, अर्थात् यौगिक शब्दके बिना दो तीन शब्दोंका मिलना; जैसा, कीट पतङ्ग पशु पक्षी इत्यादि ।

२। वज्रवीहि, अर्थात् कथित दो तीन पदोंका स्वार्थ त्याग करके तद्वारा जो कोई पदार्थका बोध होके पद में युक्त होय; जैसा कि, दुराचार, सर्व व्यापी ।

३। कर्मधारय, अर्थात् गुणवाचक शब्दमें संज्ञाका योग; जैसा कि, महाराज *, महाबल, सर्वलोक, सर्वदिन, अतिचिन्तित ।

४। तत्पुरुष, अर्थात् कारक गम्यमान पदके साथ पदका मिलाप; जैसा, धनमत्त, वृक्षपतित, पावनकर्त्ता, भ्रातृद्वेष्ट, कर्मकारी, प्रेमकारक, चिरस्थायी, दीनहीन, काशीवासी, विश्वेश्वर, देशाधीश ।

५। द्विगु, अर्थात् संख्यावाचक पदके साथ शब्दका मेल; जैसा कि, त्रिभूवन, त्रिरात्र, चतुर्दिक ।

६। अव्ययीभाव, अर्थात् क्रिया विशेषणके साथ शब्दका मेल; जैसा, जावज्जीवन, समूहदान, नित्याशीर्वाद ।

* समासमें आकारान्त शब्दके आकारका लोप होय; जैसा कि, महा और राज् इन् दोनोंका समास करनेसे संज्ञाके आकारका लोप होके महाराज शब्द सिद्ध होता है ।



सन्धि वर्णन ।

१ प्रश्न । सन्धि किम्को कहते हैं ?

उत्तर । अक्षरोंके भेजकों सन्धि कहते हैं ।

२ प्र । सन्धि कै प्रकारकी है ?

उ । स्वरसन्धि, वृद्धसन्धि, विसर्गसन्धि इन् भेदोंसे सन्धि तीन प्रकारकी है ।

स्वरसन्धि ।

३ प्र । स्वरसन्धिके कितने अंश हैं ?

उ । गुण, वृद्धि, दीर्घ, अन्तर्गत येही चार अंश स्वरसन्धिके हैं ।

४ प्र । सन्धिमें किस स्वरको गुण होता है ?

उ । इ ई उ ऊ ऋ ॠ इन्कः स्वरोंको गुण होता है; जैसा, इ गुण होनेसे ए होय, दृष्टान्त गज इन्द्र गजेन्द्र ।

ई ए होय परम ईश्वर परमेश्वर ।

उ ओ होय महा*उत्सव महोत्सव ।

ऊ औ होय सर्व ऊर्द्ध सौर्द्ध ।

ऋ अर् होय परम ऋत परमर्त ।

५ प्र । सन्धिमें किन् स्वरोंको वृद्धि होती है ?

उ । अ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ए ओ ऐ औ, इन् दश स्वरोंको वृद्धि होती है; जैसा कि ।

अ वृद्धि होनेसे आ होय । दृष्टान्त यथार्थ याथार्थ ।

इ ऐ होय शिशु शैशव ।

* मुल अथवा दृढ़ होनेसे आत्तारान्त शब्दके आकारका स्वर होय ।

ई वृद्धि होनेसे ऐ होय, दृष्टान्त धीर, धैर्य ।
 छ आ होय गुरु, गौरव ।
 ऊ औ होय शूर, शौर्य ।
 ऋ आर होय अर्थ कार्यण्य ।
 ए ऐ होय तथा * एव तथैव ।
 ओ औ होय महा † औषधि महौषधि ।
 ऐ ऐ होय महा ‡ ऐश्वर्य महौश्वर्य ।
 औ औ होय उत्तम औषध उत्तमौषध ।

६ प्र। दो खरोकी दीर्घ सन्धि कब होय ?

उ। जब दो खर समान इकट्ठे होय, तब उन्होंका योग होनेसे दीर्घ होय; जैसा कि।

अ दीर्घ होनेसे आ होय, दृष्टान्त अद्य अवधि अद्यावधि ।

इ ई होय कवि इन्द्र कवीन्द्र ।

उ ऊ होय विधु उदय विधूदय ।

७ प्र। अन्तर्गत विशेष खरका भेष होनेसे किस् प्रकारसे सन्धि होती है ?

उ। सो इस प्रकारसे होती है; जैसा कि।

ई और ईय होय, दृष्टान्त इति आदि इत्यादि ।

उ और ऊव होय बधू आगमन बध्वागमन ।

ऋ और ऋर होय पिष्ट आगमन पिष्टागमन ।

ए अय् .. होय पै अस ययस् ।

ऐ आय् .. होय नै अक नायक ।

औ आव् .. होय गो ईश शशीश ।

आ आव् .. होय पै अक पावक ।

* † ‡ पक्षिणीं टोपको देखो ।

३ पाठ ।

इहं सन्धि ।

१ प्र। इहं वर्णोंकी सन्धि किस प्रकारसे होती है?

उ। एक वर्गका, और वर्गके साथ भेद्य होनेसे इहंकी सन्धि होती है सो इहं अक्षर उदाहरणमें पाई जाती है।

१ चवर्गका अक्षर तवर्गके दूसरे अथवा तीसरे अक्षरमें भिन्न केसे सन्धि होय; जैसा।

त सन्धिमें च होय दृष्टान्त तत् चेष्टा तचेष्टा।

द .. ज होय .. सट् जात सज्जात।

त .. ठ होय .. तत् टीका तटीका।

२ प्र चतुर्थ वर्गके अर्थात् तवर्गके आगे रहके द्वितीय वर्गके स्वजातीय अक्षरकी बदली होके सन्धि होय; जैसा तत् शरीर तच्छरीर।

३ चौथा वर्ग लकारके पहिले होनेसे प्रत्येकको ल होय; यथा, सत् लोक सलोक।

४ जो सब वर्णोंका पहिला अक्षर खरवर्ण, वा अत्यल्प वर्ण, वा अनुनासिक वर्ण, वा निज वर्णके तीसरे वा चौथे वर्णके पहिले होय; तब स्ववर्गके तीसरे वर्णसे बदली किया जाय; जैसा कि।

त खरके पहिले द होय, दृष्टान्त तत् अवधि तदवधि।

क वके पहिले ग होय वाक् व्यय वागव्यय।

१। त, क, इन् दोनो अक्षरोंके स्थानमें अनुनासिक वर्ण होय क्या नहीं?

उ। हाँ होय; जैसा कि।

त इहंमें न होय, दृष्टान्त तत् मध्यम तन्मध्यम।

क क होय . वाक् मनः वाङ्मनः।

१। अनुस्वारके परे वर्ण रहनेसे सानुनासिक वर्णकी सन्धि होनेसे कैसा होय ?

उ। सो ऐसा होय; यथा, संकल्प सङ्कल्प, शंकर शङ्कर, संचित सञ्चित, संजय सङ्गय, शंतनु शन्तनु, संपूर्ण सम्पूर्ण, समस्त सम्मस्त।

४। इससे परे ड, ङ, न, और ह, इन् सब वर्णोंके आगे खर रहनेसे इन्को हितु होय क्या नहीं ?

उ। हाँ होय; जैसा, सन् आत्मा सन्नात्मा वृक्ष छाया वृक्षच्छाया।

००११३०११०

४ पाठ।

विसर्ग सन्धि।

१ प्रश्न। विसर्गान्त शब्दकी सन्धि किस प्रकारसे होती है ?

उत्तर। वह अनेक प्रकारसे होती है; जैसा।

: सन्धिमें श्र होय दृष्टान्त निः चिन्त निश्चिन्त।*

: ष होय धनुः टङ्कार धनुष्टङ्कार।†

: स होय मनः कामना मनस्वामना।‡

: ओ होय अधः मुख अधोमुख।§

: र होय ज्योतिः वित् ज्योतिर्वित्॥

* श और ह इन दोनों अक्षरोंके पहिले विसर्ग रहनेसे श्र होय।

† ट और ठ इन दोनों अक्षरोंके पहिले विसर्ग रहनेसे ष होय।

‡ त और थ इन दोनों अक्षरोंके पहिले विसर्ग रहनेसे स होय।

§ ह य व र ल ञ ण न ङ म ञ् ङ घ ष भ ञ् ङ द न व इन सब अक्षरोंके पहिले विसर्ग रहनेसे ओ होय।

॥ श र उ ऋ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ञ ण न ङ म ञ् ङ घ ष भ ञ् ङ द न व इन सब अक्षरोंके पहिले इकारान्त या उकारान्त शब्दके परे विसर्ग रहनेसे र होय।

कोष ।



अयसर,	जो आगे चले अर्थात् अगुवा ।
अधिकन्तु,	औरभी, विशेषसे ।
अनुनासिक,	नासिकाको स्थिती जिसका उच्चारण होय ।
अनुस्वार,	विन्दुमात्र जो वर्ण ।
अपभाषा,	निन्दित वाक्य ।
अथय,	जिस शब्दके आगे कोई कारक नहीं रहने सके ।
अहो,	आश्चर्य ।
आकांक्षा,	इच्छा ।
आकारान्त,	जिस्के आगे आकार रहे ।
आश्रुति,	आकार, स्वयं, अवयव ।
इतर,	दूसरा, भिन्न, छेड़ा, सामान्य ।
उदाहरण,	दृष्टान्त ।
ऊर्ध्व,	ऊपर ।
एकवचन,	जिस्में एक ठौर समझा जाय ।
एकांश,	एक भाग ।
एवं,	ऐसे, और ।
एवम्युकार,	इस् भाँत, इस् प्रकार ।
ओष्ठ,	छेठ ।
ओष्ठः,	जिस् अक्षरका उच्चारण ओष्ठसे होय ।
कण्ठ्य,	जिस् अक्षरका उच्चारण कण्ठसे होय ।
कारक,	संज्ञाकी प्रत्यय, कर्त्ता, कर्म इत्यादि ; कर्नेहार ।
कीद,	कीड़ा ; दिवाका मैस ।

क्रिया,	धातुका अर्थ ।
झीव,	जड़सक ।
खड्ड,	एक वस्तुके अनेक भाग, टुक ।
गमय,	जाने योग्य ।
गमयमान,	जो समझा जाय ।
शबीर,	गौ पासने हारा ।
गाभी,	गाय ।
गोप,	गाय घरावने हारा ।
गोपास,	गाय पासने हारा ।
गोपी,	गोपकी स्त्री ।
गोख,	पात्र विशेष ; कुछा ; वस्तुकाकार, जैसा भूगोला खगोल ।
गौर,	वज्रदेश ; ब्राह्मणकी जाति ।
गौर,	गौरा ।
गौरव,	मर्यादा ।
गौरवान्वित,	मर्यादा विभूति ।
घटना,	रचना ।
घटान,	संज्ञाको अनेक प्रत्ययान्त कर्मा ; योग कर्मा ; न्यून कर्मा, यथा, भाव घटाना ।
घोटक,	घोडा ।
घोटकी,	घोड़ी ।
घोटा,	घोटा, दण्ड विशेष ।
घोष,	बङ्गाली शूद्रकी एक जाति ; अहीरोंका गांव ।
घोषणा,	स्पष्टकर्क कहना ।
चन्द्र,	चांद ।
चन्द्रविन्दु,	आधे चन्द्र सरीखा चंद्र ।
चन्द्रिका,	चाँदनी ।

अङ्गम,
 अङ्गस,
 ज्योतिः,
 ज्योतिष्,
 ज्योतिषी,
 ज्योतिर्वेत्ता,
 तदुत्तर,
 तनु,
 तानपूरा,
 ताक्षय,
 तेजस्कर,
 तेजसी,
 तैष,
 दत्त,
 दन्त्य,
 दीर्घ,
 दुहितः,
 दृष्ट,
 दृश्यमान,
 धात्वर्थ,
 धारा,
 धैर्य,
 जघ,
 बभू,
 भर,
 नरक,
 नायक,

चलनेकी सामर्थ्य जिनको है वे स्व ।
 वन ।
 तेजः ।
 गणित शास्त्र ।
 ज्योतिष्की विद्याको जोर जाने ।
 ज्योतिषी ।
 उसके पीछे; उसका उत्तर ।
 सूक्ष्म, मिहीन; शरीर ।
 वाद्ययन्त्र ।
 जिस अक्षरका उच्चारण ताक्षुवे में होय ।
 तेजोमय, तेजका प्रकाशकर्ता ।
 तेजोयुक्त ।
 तैष ।
 जो दिया गया है ।
 जिस अक्षरका उच्चारण दांतेमें होय ।
 लंबा, खम्बा ।
 बेटा ।
 जो देखा जाय ।
 जो देखनेमें आवे ।
 क्रिया, क्रियाका मूल ।
 प्रवाह, रीति ।
 धीरता ।
 नङ्गा ।
 मृदु, कोमल ।
 पुरुष ।
 बाधक भोग करनेका स्थान ।
 प्रापक; कामी ।

निजीव,	मुष्ठा, प्रायहीन।
पदार्थ,	शब्दका अर्थ, वस्तु।
पावक,	आग।
प्रकृत,	व्यर्थ, सत्य।
प्रत्ययान्त,	पद जिसके आगे प्रत्यय है।
प्रभृति,	इत्यादि।
प्रश्न,	पूछ, जिज्ञासा, अर्थात् जाननेकी इच्छा।
प्राप्त,	जो पाया गया है।
प्राप्त्यर्थ,	जिसमें प्राप्ति का ज्ञान है।
प्रेरणार्थ,	जिसमें प्रेरण का ज्ञान है।
वर्ग,	क आदि म पर्यन्त जो पांच हैं।
वर्ण,	अक्षर।
वर्णमाला,	अकारादि हकार पर्यन्त जो अक्षरोंकी पद्धति।
बहुवचन,	जिसे बहुवचन का ज्ञान होय।
विवेक,	विचार।
विभक्त,	एथक्, अक्षर, जो बाँटा गया।
विभिन्न,	एथक्, तिसर वितर।
विसर्ग,	: हो विन्दु।
विसर्गान्त,	जिसके अन्तमें विसर्ग होय।
बोधक,	आपक।
व्यय,	जो काम काजमें फसा होय।
व्यञ्जन,	अकारादि खरहीन जो वर्ण।
व्याप्त,	वर्जित, प्रगट।
भ्रम,	फूटा।
भाव,	अभिप्राय, मर्म।
मूर्जन,	जिसका उच्चारण मस्तकसे होय।
मृग,	हरिण।

वधवा,	जैसे ।
युक्त,	मिष्टा ।
धोवन,	चार कोश ।
धोवना,	घटना ।
रक्त,	लोह ; बाण ।
रक्तपात,	बौद्ध गिर्ना ।
रक्तिमा,	बाणी ।
रजः,	धुलि ।
रज,	बुद्ध ।
रुधिर,	लोह ।
सम,	सगा ।
सूत,	धूर्त, चतुर ।
शब्दविपर्ययक,	जो शब्दका अनुगामी होके शब्दके अर्थको उल्टा उत्पन्न करे ।
शब्दानुवर्तक,	जो शब्दका अनुगामी होके केवल शब्दके अर्थ ही को सिद्ध करे ।
शब्दोद्दीपक,	जो शब्दका अनुगामी होके शब्दके अर्थका प्रकाश करे ।
शर,	बाण ।
शव,	मृतक, लाश ।
शास्त्री,	शास्त्रके अर्थका ज्ञाता ।
शिशु,	बालक, बच्चा ।
शूर,	वीर, भट ।
शैशव,	बाल्यावस्था, बालक पन ।
शैर्ष्य,	वीरत्व ।
षट्,	छः ।
शेड्य,	लोह ।

संख्या,	गिनती ।
संख्यावाचक,	जिस्से संख्या जानी जाय ।
संज्ञा,	शब्द, नाम ।
संयोग,	मेस ।
सङ्गण्य,	कामना, मागस ।
सर्व,	सब ।
सर्वाङ्ग,	सब दिन ।
समूह,	अनेक ।
सागुनासिक,	नासिकाके साथ मुखसे जिस्का उच्चारण होय ।
सामान्य,	साधारण ।
सुभक्ष्य,	उत्तम खाद्य ।
स्वत्व,	अधिकार ।
स्वर,	अकारादि विसर्गान्त स्रोतश्च अक्षर ।
सार्थ,	अपना, काम ।
स्यञ्च,	स्याम ।
स्यावर,	स्थिर, बीचस्थ ।
इत्या,	वध ।
इत्यारा,	वधका कर्त्ता, वधक ।
इय,	घोड़ा ।
इवन्त,	अज्ञानान्त, जिस् शब्दमें स्वर न होय ।
ऊख,	कोटा, अल्प, बौना ।
भूमा,	पृथिवी ।
भूमापति,	पृथिवीका स्वामी, अर्थात् राजा ।

